الجزء ٢٢

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا

नेक	और अ़मल करे	अल्लाह और उस के रसूल (स) की	तुम में से	इताअ़त करे	और जो

نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

31	इ़ज़्ज़त का रिज़्क़	उस के लिए	और हम ने तैयार किया	दोहरा	उस का अजर	हम देंगे उस को

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ

तो मुलाइमत न करो	तुम परहेज़गारी करो	अगर	औरतों में से	किसी एक की तरह	तुम नहीं हो	ऐ नबी (स) की बीवियो!

بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾

32	अच्छी (माकूल)	बात	और बात करो तुम	रोग (खोट)	उस के दिल में	वह जो	कि लालच करे	गुफ़्तगू में

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى

अगला	(ज़माना-ए) जाहिलियत	बनाव सिंगार	और बनाव सिंगार का इज़्हार करती न फिरो	अपने घरों में	और क़रार पकड़ो

وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

अल्लाह और उस का रसूल	और इताअ़त करो	ज़कात	और देती रहो	नमाज़	और क़ाइम करो

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ

ऐ अहले बैत	आलूदगी	तुम से	कि दूर फ़रमा दे	अल्लाह चाहता है	इस के सिवा नहीं

وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ

तुम्हारे घर (जमा)	में	जो पढ़ा जाता है	और तुम याद रखो	33	खूब पाक	और तुम्हें पाक और साफ़ रखे

ع ٧/١

مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

34	बाख़बर	बारीक बीन	है	बेशक अल्लाह	और हिक्मत	अल्लाह की आयतें	से

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

और मोमिन औरतें	और मोमिन मर्द	और मुसलमान औरतें	मुसलमान मर्द	बेशक

وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ

और सब्र करने वाले मर्द	और रास्तगो औरतें	और रास्तगो मर्द	और फ़रमांबरदार औरतें	और फ़रमांबरदार मर्द

وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ

और सदक़ा करने वाले मर्द	और आजिज़ी करने वाली औरतें	और आजिज़ी करने वाले मर्द	और सब्र करने वाली औरतें

وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ

और हिफ़ाज़त करने वाले मर्द	और रोज़ा रखने वाली औरतें	और रोज़ा रखने वाले मर्द	और सदक़ा करने वाली औरतें

فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا

बकसरत	अल्लाह	और याद करने वाले	और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें	अपनी शर्मगाहें

وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾

35	और अजरे अ़ज़ीम	बख़्शिश	उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया	और याद करने वाली औरतें

और तुम में से जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करे और नेक अ़मल करे हम उसे उस का दोहरा अजर देंगे और हम ने उस के लिए इ़ज़्ज़त का रिज़्क़ तैयार किया है। (31)

ऐ नबी (स) की बीवियो! औ़रतों में से तुम किसी एक की तरह (आम) नहीं हो, अगर तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो तो गुफ़्तगू में मुलाइमत न करो कि जिस के दिल में खोट है वह लालच (ख़याले फ़ासिद) करे और तुम बात करो माकूल बात। (32)

और अपने घरों में क़रार पकड़ो, और अगले ज़माना-ए-जाहिलियत के बनाव सिंगार का इज़्हार करती न फिरो, और नमाज़ क़ाइम करो, और ज़कात देती रहो, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करो, बेशक अल्लाह चाहता है कि वह तुम से आलूदगी दूर फ़रमा दे ऐ अहले बैत! और तुम्हें खूब (हर तरह से) पाक और साफ़ रखे। (33)

और तुम याद रखो जो तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें और हिक्मत (दानाई की बातें) पढ़ी जाती हैं, बेशक अल्लाह बारीक बीन, बाख़बर है। (34)

बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, और फ़रमांबरदार मर्द और फ़रमांबरदार औरतें, और रास्तगो मर्द और रास्तगो औरतें, और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, और आजिज़ी करने वाले मर्द और आजिज़ी करने वाली औरतें, और सदक़ा (ख़ैरात) करने वाले मर्द और सदक़ा (ख़ैरात) करने वाली औरतें, और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औ़रतें, और हिफ़ाज़त करने वाले मर्द अपनी शर्मगाहों की, और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और अल्लाह को बकसरत याद करने वाले मर्द और (अल्लाह को) याद करने वाली औरतें, अल्लाह ने उन (सब) के लिए तैयार की है बख़्शिश और अजरे अ़ज़ीम। (35)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا

किसी काम का	अल्लाह और उस का रसूल	फ़ैसला कर दें	जब	और न किसी मोमिन औरत के लिए	किसी मोमिन मर्द के लिए	और नहीं है

اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

अल्लाह और उस का रसूल	नाफ़रमानी करेगा	और जो	उन के काम में	कोई इख़्तियार	उन के लिए	कि (बाक़ी) हो

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ

उस पर	अल्लाह ने इन्आम किया	उस शख़्स को	और (याद करो) जब आप (स) फ़रमाते थे	36	सरीह	गुमराही	तो अलबत्ता वह गुमराही में जा पड़ा

وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ

अपने दिल में	और आप (स) छुपाते थे	और डर अल्लाह से	अपनी बीवी	अपने पास	रोके रख	उस पर	और आप (स) ने इन्आम किया

مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا

फिर जब	तुम उस से डरो	कि	ज़ियादा हक़दार	और अल्लाह	लोग	और आप (स) डरते थे	उस को ज़ाहिर करने वाला	जो अल्लाह

قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिनों	पर	न रहे	ताकि	हम ने उसे तुम्हारे निकाह में दे दिया	अपनी हाजत	उस से	ज़ैद	पूरी कर ली

حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ

और है	अपनी हाजत	उन से	पूरी कर चुकें	जब वह	अपने ले पालक	बीवियों में	कोई तंगी

اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ

उस के लिए	मुक़र्रर किया अल्लाह ने	उस में जो	कोई हरज	नबी पर	नहीं है	37	हो कर रहने वाला	अल्लाह का हुक्म

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ۙ﴿٣٨﴾

38	अन्दाज़े से	मुक़र्रर किया हुआ	अल्लाह का हुक्म	और है	पहले	गुज़रे	वह जो	में	अल्लाह का दस्तूर

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ

अल्लाह के सिवा	किसी से	वह नहीं डरते	और उस से डरते हैं	अल्लाह के पैग़ामात	पहुँचाते हैं	वह जो

وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ

तुम्हारे मर्दों में से	किसी के	बाप	मुहम्मद (स)	नहीं हैं	39	हिसाब लेने वाला	अल्लाह	और काफ़ी है

وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

हर शै का	अल्लाह	और है	नबियों	और मुहर	अल्लाह के रसूल	और लेकिन

عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۙ﴿٤١﴾ ع ٥ ٦ ٢

41	बकस्रत	याद	अल्लाह	याद करो तुम	ईमान वालो	ऐ	40	जानने वाला

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ

और उस के फ़रिश्ते	तुम पर	भेजता है	वही जो	42	और शाम	सुबह	और पाकीज़गी बयान करो उस की

لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٣﴾

43	मेहरबान	मोमिनों पर	और है	नूर की तरफ़	अन्धेरों	से	ताकि वह तुम्हें निकाले

और (गुन्जाइश) नहीं है किसी मोमिन मर्द और न किसी मोमिन औरत के लिए कि जब फ़ैसला कर दें अल्लाह और उस के रसूल (स) किसी मामले का, कि उन के लिए उस मामले में कोई इख़्तियार बाक़ी हो, और जो नाफ़रमानी करेगा, अल्लाह और उस के रसूल (स) की तो अलबत्ता वह सरीह गुमराही में जा पड़ा। (36)
और याद करो जब आप (स) उस शख़्स [ज़ैद ؓ बिन हारिसा] को फ़रमाते थे जिस पर अल्लाह ने इन्आम किया और आप (स) ने भी उस पर इन्आम किया कि अपनी बीवी [ज़ैनब ؓ] को अपने पास रोके रख और अल्लाह से डर, और आप (स) छुपाते थे अपने दिल में वह (बात) जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और आप (स) लोगों (के तअ़न) से डरते थे और अल्लाह ज़ियादा हक़दार है कि तुम उस से डरो, फिर जब ज़ैद ने उस [ज़ैनब] से अपनी हाजत पूरी कर ली तो हम ने उसे आप (स) के निकाह में दे दिया, ताकि मोमिनों पर कोई तंगी न रहे अपने ले पालकों की बीवियों (से निकाह करने में) जब वह उन से अपनी हाजत पूरी कर लें (तलाक़ दे दें) और अल्लाह का हुक्म (पूरा हो कर) रहने वाला है। (37)
नबी पर उस काम में कोई हरज (तंगी) नहीं है जो अल्लाह ने उस के लिए मुक़र्रर किया, अल्लाह का (यही) दस्तूर (रहा है) उन में जो पहले गुज़रे हैं और अल्लाह का हुक्म (सहीह) अन्दाज़े से मुक़र्रर किया हुआ है। (38)
वह जो अल्लाह के पैग़ामात पहुँचाते हैं और वह उस से डरते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते, और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला। (39)
मुहम्मद (स) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और (सब) नबियों पर मुहर (आख़री नबी) हैं और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (40)
ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह को याद करो बकस्रत। (41)
और सुबह और शाम उस की पाकीज़गी बयान करो। (42)
वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते (भी) ताकि वह तुम्हें अँधेरों से नूर की तरफ़ निकाल लाए, और अल्लाह मोमिनों पर मेहरबान है। (43)

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَّاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٤٤﴾

44	बड़ा अच्छा	अजर	उन के लिए	और तैयार किया उस ने	सलाम	वह मिलेंगे उस को	जिस दिन	उन की दुआ

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٤٥﴾ وَّدَاعِيًا

और बुलाने वाला	45	और डर सुनाने वाला	और खुश ख़बरी देने वाला	गवाही देने वाला	बेशक हम ने आप (स) को भेजा	ऐ नबी (स)

اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٦﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ

उन के लिए	यह कि	मोमिनों (जमा)	और खुशख़बरी दें	46	रोशन	और चिराग़	उस के हुक्म से	अल्लाह की तरफ़

مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿٤٧﴾ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ

उन का ईज़ा देना	और परवा न करें	और मुनाफ़िक़ (जमा)	काफ़िर (जमा)	और कहा न मानें	47	बड़ा	फ़ज़्ल	अल्लाह (की तरफ़) से

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا

जब	ईमान वालो	ऐ	48	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी	अल्लाह पर	और भरोसा करें

نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ

तुम उन्हें हाथ लगाओ	कि	पहले	तुम उन्हें तलाक़ दो	फिर	मोमिन औरतों	तुम निकाह करो

فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ

पस तुम उन्हें कुछ मताअ़ दो	कि पूरी कराओ तुम उस से	कोई इद्दत	उन पर	तो नहीं तुम्हारे लिए

وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَحْلَلْنَا

हम ने हलाल कीं	ऐ नबी (स)!	49	अच्छी तरह	रुख़सत	और उन्हें रुख़सत कर दो

لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْٓ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ

तुम्हारा दायां हाथ	मालिक हुआ	और जो	उन का मेहर	तुम ने दे दिया	वह जो कि	तुम्हारी बीवियां	तुम्हारे लिए

مِمَّآ اَفَاۗءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ

और तुम्हारी फुफियों की बेटियां	और तुम्हारे चचाओं की बेटियां	तुम्हारे	अल्लाह ने हाथ लगा दीं	उन से जो

وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۡ وَامْرَاَةً

और औरत	तुम्हारे साथ	उन्हों ने हिज्रत की	वह जिन्हों ने	और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां	और तुम्हारे मामूओं की बेटियां

مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ

कि	चाहे नबी (स)	अगर	नबी (स) के लिए	अपने आप को	वह बख़्शदे (नज़्र कर दे)	अगर	मोमिना

يَّسْتَنْكِحَهَا ۤ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ قَدْ عَلِمْنَا

अलबत्ता हमें मालूम है	मोमिनों	अ़लावा	तुम्हारे लिए	ख़ास	उसे निकाह में लेले

مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْٓ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ

मालिक हुए उन के दाहिने हाथ (कनीज़ें)	और जो	उन की औरतें	में	उन पर	जो हम ने फ़र्ज़ किया

لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾

50	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	कोई तंगी	तुम पर	ताकि न रहे

उन का इस्तिक़बाल जिस दिन वह उस को मिलेंगे “सलाम” से होगा, और उस ने उन के लिए बड़ा अच्छा अजर तैयार किया है। (44)
ऐ नबी (स)! बेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला और खुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (45)
और उस के हुक्म से अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला, और रोशन चिराग़। (46)
और आप (स) मोमिनों को यह खुशख़बरी दें कि उन के लिए अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल है। (47)
और आप (स) कहा न मानें काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का, और आप (स) उन के ईज़ा देने का ख़याल न करें और अल्लाह पर भरोसा करें। और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (48)
ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औ़रतों से निकाह करो, फिर तुम उन्हें उस से पहले तलाक़ दे दो कि तुम उन्हें हाथ लगाओ तो उन पर तुम्हारा (कोई हक़) नहीं कि उन की इद्दत पूरी कराओ, पस उन्हें कुछ सामान दे दो और रुख़सत कर दो अच्छी तरह रुख़सत। (49)
ऐ नबी (स)! हम ने तुम्हारे लिए हलाल कीं तुम्हारी वह बीवियां जिन को तुम ने उन का मेहर दे दिया, और तुम्हारी कनीज़ें उन में से जो अल्लाह ने (ग़नीमत में से) तुम्हारे हाथ लगा दीं और तुम्हारे चचाओं की बेटियां, और तुम्हारी फुफियों की बेटियां, और तुम्हारे मामूओं की बेटियां, और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां, वह जिन्हों ने तुम्हारे साथ हिज्रत की, और वह मोमिन औ़रत जो अपने आप को नबी (स) की नज़्र कर दे, अगर नबी (स) उसे निकाह में लेना चाहे, यह आ़म मोमिनों के अ़लावा ख़ास तुम्हारे लिए है, अलबत्ता हमें मालूम है जो हम ने उन की औ़रतों और कनीज़ों (के बारे) में उन पर फ़र्ज़ किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (50)

تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ۖ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ

आप (स) तलब करें	और जिस को	जिसे आप (स) चाहें	अपने पास	और पास रखें	उन में से	जिस को आप (स) चाहें	दूर रखें

مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ

उन की आँखें	कि ठंडी रहें	यह ज़ियादा क़रीब है	आप (स) पर	तो कोई तंगी नहीं	दूर कर दिया था आप ने	उन में से जो

وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا

जो	जानता है	और अल्लाह	वह सब की सब	उस पर जो आप (स) ने उन्हें दीं	और वह राज़ी रहें	और वह आज़ुर्दा न हों

فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ

औरतें	आप के लिए	हलाल नहीं	51	बुर्दबार	जानने वाला	अल्लाह	और है	तुम्हारे दिलों में

مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ

आप (स) को अच्छा लगे	अगरचे	औरतें	से (और)	उन से	यह कि बदल लें	और न	उस के बाद

حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर	अल्लाह	और है	जिस का मालिक हो तुम्हारा हाथ (कनीज़ें)	सिवाए	उन का हुस्न

رَقِيبًا ﴿٥٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ ع ٦ ١٢ ٣

नबी (स)	घर (जमा)	तुम दाख़िल न हो	ईमान वालो	ऐ	52	निगहबान

إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَاظِرِينَ إِنَاهُ وَلَٰكِنْ إِذَا

जब	और लेकिन	उस का पकना	न राह तको	खाना	तरफ़ (लिए)	तुम्हारे लिए	इजाज़त दी जाए	सिवाए यह कि

دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ

और न जी लगा कर बैठे रहो	तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो	तुम खालो	फिर जब	तो तुम दाख़िल हो	तुम्हें बुलाया जाए

لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِي مِنْكُمْ ۖ

तुम से	पस वह शर्माते हैं	नबी (स)	ईज़ा देती है	यह तुम्हारी बात	बेशक	बातों के लिए

وَاللَّهُ لَا يَسْتَحْيِي مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا

कोई शै	तुम उन से मांगो	और जब	हक़ (बात) से	नहीं शर्माता	और अल्लाह

فَاسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ

और उन के दिल	तुम्हारे दिलों के लिए	ज़ियादा पाकीज़गी	तुम्हारी यह बात	पर्दे के पीछे से	तो उन से मांगो

وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ

उस की बीवियाँ	यह कि तुम निकाह करो	और न	अल्लाह का रसूल (स)	कि तुम ईज़ा दो	तुम्हारे लिए	और (जाइज़) नहीं

مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿٥٣﴾

53	बड़ा	अल्लाह के नज़्दीक	है	तुम्हारी यह बात	बेशक	कभी	उन के बाद

إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٤﴾

54	जानने वाला	हर शै	है	तो बेशक अल्लाह	या उसे छुपाओ	कोई बात	अगर तुम ज़ाहिर करो

आप (स) जिस को चाहें दूर रखें उन में से, और जिसे चाहें अपने पास रखें, और उन में से जिस को आप (स) ने दूर कर दिया था आप (फिर) तलब करें तो कोई तंगी (हरज) नहीं आप (स) पर, यह ज़ियादा क़रीब है कि (उस से) उन की आँखें ठंडी रहें और वह आज़ुर्दा न हों, और वह सब की सब उस पर राज़ी रहें जो आप उन्हें दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह जानने वाला बुर्दबार है। **(51)**

हलाल नहीं आप (स) के लिए इस के बाद (और) औरतें, और न यह कि आप (स) उन से और औरतें बदल लें अगरचे आप (स) को अच्छा लगे उन का हुस्न, सिवाए आप (स) की कनीज़े, और अल्लाह हर शै पर निगहबान है। **(52)**

ऐ ईमान वालो! तुम नबी (स) के घरों में दाख़िल न हो, सिवाए इस के कि तुम्हें इजाज़त दी जाए खाने के लिए, उस के पकने की राह न तको, लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो तुम दाख़िल हो, फिर जब तुम खाना खालो तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो, और बातों के लिए जी लगा कर न बैठे रहो। बेशक तुम्हारी यह बात नबी (स) को ईज़ा देती है, पस वह तुम से शर्माते हैं, और अल्लाह हक़ बात (फ़रमाने) से नहीं शर्माता, और जब तुम उन (नबी (स) की बीवियों) से कोई शै मांगो तो उन से पर्दे के पीछे से मांगो, यह बात तुम्हारे और उन के दिलों के लिए ज़ियादा पाकीज़गी का ज़रीआ है, और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल (स) को ईज़ा दो, और न यह (जाइज़ है) कि उन के बाद कभी भी उन की बीवियों से तुम निकाह करो, बेशक तुम्हारी यह बात अल्लाह के नज़्दीक बड़ा (गुनाह) है। **(53)**

अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ तो बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। **(54)**

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَآ اِخْوَانِهِنَّ

और न अपने भाई	अपने बेटों	और न	अपने बाप	में	औरतों पर	गुनाह नहीं

وَلَآ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَآ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا

और न	अपनी औरतें	और न	अपनी बहनों के बेटे	और न	अपने भाइयों के बेटे	और न

مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰي

पर	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरती रहो	जिस के मालिक हुए उन के हाथ (कनीज़ें)

كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	नबी (स) पर	दरूद भेजते हैं	और उस के फ़रिश्ते	बेशक अल्लाह	55	गवाह (मौजूद)	हर शै

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	बेशक	56	खूब सलाम	और सलाम भेजो	उस पर	दरूद भेजो	ईमान वालो

يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ

और तैयार किया उस ने	और आख़िरत	दुनिया में	उन पर लानत की अल्लाह ने	अल्लाह और उस का रसूल (स)	ईज़ा देते हैं

لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

और मोमिन औरतें	मोमिन मर्द (जमा)	ईज़ा देते हैं	और जो लोग	57	रुस्वा करने वाला अज़ाब	उन के लिए

ع ٦ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٨﴾ ع

58	सरीह	और गुनाह	बुहतान	अलबत्ता उन्हों ने उठाया	कि उन्हों ने कमाया (किया)	बग़ैर

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ

डाल लिया करें	मोमिनो	और औरतों को	और बेटियों को	अपनी बीवियों को	फ़रमा दें	ऐ नबी (स)

عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۭ

तो उन्हें न सताया जाए	उन की पहचान हो जाए	कि	क़रीब तर	यह	अपनी चादरें	से	अपने ऊपर

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٩﴾ لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ

मुनाफ़िक़ (जमा)	बाज़ न आए	अगर	59	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह है

وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ

मदीना	में	और झूटी अफ़्वाहें उड़ाने वाले	रोग	उन के दिलों में	और वह जो

معانقة ١٢ عند المتأخرين ١٢

لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٠﴾ مَّلْعُوْنِيْنَ ۚۛ

फिटकारे हुए	60	चन्द दिन	सिवाए	इस (शहर) में	तुम्हारे हमसाया न रहेंगे वह	फिर	उन के	हम ज़रूर तुम्हें पीछे लगा देंगे

اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ

उन लोगों में जो	अल्लाह का दस्तूर	61	बुरी तरह मारा जाना	और मारे जाएंगे	पकड़े जाएंगे	वह पाए जाएंगे	जहां कहीं

الربع خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾

62	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	इन से पहले	गुज़रे

औरतों पर गुनाह नहीं (पर्दा न करने में) अपने बाप, और न अपने बेटों, और न अपने भाइयों, और न अपने भाइयों के बेटों, और न अपनी बहनों के बेटों, और न अपनी औरतों से, और न अपनी कनीज़ों से, (ऐ औरतो) तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर शै पर गवाह (मौजूद) है। (55) बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी (स) पर दरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उस पर दरूद भेजो और खूब सलाम भेजो। (56) बेशक जो लोग अल्लाह को और उस के रसूल (स) को ईज़ा देते हैं अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की (अपनी रहमत से महरूम कर दिया) और उनके लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तैयार किया। (57) और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ईज़ा देते हैं, बग़ैर उस के कि उन्हों ने कुछ किया हो तो अलबत्ता उन्हों ने उठाया (अपने सर लिया) बुहतान और सरीह गुनाह। (58) ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी बीवियों और अपनी बेटियों को, और मोमिनों की औरतों को फ़रमा दें कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें (घूंघट निकाल लिया करें) यह (उस से) क़रीब तर है कि उन की पहचान हो जाए, तो उन्हें न सताया जाए, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (59) अगर बाज़ न आए मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में रोग है, और मदीने में झूटी अफ़्वाहें उड़ाने वाले, तो हम ज़रूर तुम्हें उन के पीछे लगा देंगे, फिर वह इस शहर (मदीना) में चन्द दिन के सिवा तुम्हारे हमसाया (पास) न रहेंगे। (60) फिटकारे हुए, वह जहाँ कहीं पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे, और बुरी तरह मारे जाएंगे। (61) अल्लाह का (यही) दस्तूर रहा है, उन लोगों में जो गुज़रे हैं इन से पहले, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (62)

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَمَا

और क्या	अल्लाह के पास	उस का इल्म	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें	क़ियामत	से (मुतअ़ल्लिक़)	लोग	आप से सवाल करते हैं

يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों पर	लानत की	बेशक अल्लाह	63	क़रीब	हो	क़ियामत	शायद	तुम्हें ख़बर

وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا

और न	कोई दोस्त	वह न पाएंगे	हमेशा	उस में	हमाशा रहेंगे	64	भड़कती हुई आग	उन के लिए	और तैयार किया उस ने

نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا

हम ने इताअ़त की होती	ऐ काश हम	वह कहेंगे	आग में	उन के चेहरे	उलट पुलट किए जाएंगे	जिस दिन	65	कोई मददगार

اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا

और अपने बड़ों	अपने सरदार	हम ने इताअ़त की	बेशक हम	ऐ हमारे रब	और वह कहेंगे	66	और इताअ़त की होती रसूल	अल्लाह

فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ

और लानत कर उन पर	अ़ज़ाब	दुगना	दे उन्हें	ऐ हमारे रब	67	रास्ता	तो उन्हों ने भटकाया हमें

لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا ع ٨ ١٠ ٥

उन्हों ने सताया	उन लोगों की तरह	तुम न होना	ईमान वालो	ऐ	68	बड़ी	लानत

مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۭ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

69	बाआबरू	अल्लाह के नज़्दीक	और वह थे	उन्हों ने कहा	उस से जो	अल्लाह	तो बरी कर दिया उस को	मूसा (अ)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾ يُّصْلِحْ

वह संवार देगा	70	सीधी	बात	और कहो	अल्लाह से डरो	ईमान वालो	ऐ

لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

और उस का रसूल	अल्लाह की इताअ़त की	और जो-जिस	तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह	और बख़्श देगा	तुम्हारे अ़मल (जमा)	तुम्हारे लिए

فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ

आस्मान (जमा)	पर	अमानत	हम ने पेश किया	बेशक हम	71	बड़ी मुराद	तो वह मुराद को पहुँचा

وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

उस से	और वह डर गए	कि वह उसे उठाएं	तो उन्हों ने इन्कार किया	और पहाड़	और ज़मीन

وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ

ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे	72	बड़ा नादान	ज़ालिम	था	बेशक वह	इन्सान ने	और उसे उठा लिया

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ

और तौबा क़ुबूल करे	और मुश्रिक औरतों	और मुश्रिक मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों	मुनाफ़िक़ मर्दों

اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾ ع ٥ ٩ ٦

73	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	पर-की	अल्लाह

आप (स) से लोग क़ियामत के बारे में सवाल करते हैं। आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि उस का इल्म अल्लाह के पास है, और तुम्हें क्या ख़बर! शायद क़ियामत क़रीब (ही) हो। (63)

बेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर लानत की, और उन के लिए (जहन्नम की) भड़कती हुई आग तैयार की है। (64)

वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, वह न कोई दोस्त पाएंगे, और न मददगार। (65)

जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पुलट किए जाएंगे, वह कहेंगे ऐ काश! हम ने इताअ़त की होती अल्लाह की, और इताअ़त की होती रसूल (स) की। (66)

और वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! बेशक हम ने इताअ़त की अपने सरदारों की और अपने बड़ों की, तो उन्हों ने हमें रास्ते से भटकाया। (67)

ऐ हमारे रब! उन्हें दुगना अ़ज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर। (68)

ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न होना जिन्हों ने मूसा (अ) को (इल्ज़ाम लगा कर) सताया तो बरी कर दिया उस को अल्लाह ने उस से जो उन्हों ने कहा (इल्ज़ाम लगाया), और वह (मूसा अ) अल्लाह के नज़्दीक बाआबरू थे। (69)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो। (70)

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल संवार देगा, और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, और जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त की तो वह बड़ी मुराद को पहुँचा। (71)

बेशक हम ने अपनी अमानत (ज़िम्मेदारी को) पेश किया आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर, तो उन्हों ने उस के उठाने से इन्कार किया, और वह उस से डर गए, और इन्सान ने उसे उठा लिया, बेशक वह ज़ालिम, बड़ा नादान था। (72)

ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को, और अल्लाह तौबा क़ुबूल करे मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (73)

آیَاتُهَا ٥٤ ❀ سُوْرَةُ سَبَاٍ (٣٤) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6 — (34) सूरतुस सबा — आयात 54

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَلَهُ

और उसी के लिए	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	वह जिस के लिए	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

الْحَمْدُ فِی الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ۝١ یَعْلَمُ مَا یَلِجُ

जो दाख़िल होता है	वह जानता है	1	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	आख़िरत में	हर तारीफ़

فِی الْاَرْضِ وَمَا یَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا یَعْرُجُ

चढ़ता है	और जो	आस्मान से	नाज़िल होता है	और जो	उस से	निकलता है	और जो	ज़मनि में

فِیْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِیْمُ الْغَفُوْرُ ۝٢ وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِیْنَا

हम पर नहीं आएगी	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा (कहते हैं)	2	बख़्शने वाला	मेहरबान	और वह	उस में

السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰی وَرَبِّیْ لَتَاْتِیَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَیْبِ ۚ لَا یَعْزُبُ عَنْهُ

उस से	पोशीदा नहीं	ग़ैब	जानने वाला	अलबत्ता तुम पर ज़रूर आएगी	क़सम मेरे रब की	हाँ	फ़रमा दें	क़ियामत

مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِی السَّمٰوٰتِ وَلَا فِی الْاَرْضِ وَلَاۤ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ

उस से	छोटा	और न	ज़मीन में	और न	आस्मानों में	एक ज़र्रे के बराबर

وَلَاۤ اَكْبَرُ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ۝٣ لِّیَجْزِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

और उन्हों ने अ़मल किए	उन लोगों को जो ईमान लाए	ताकि जज़ा दे	3	रोशन किताब	में	मगर	बड़ा	और न

الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِیْمٌ ۝٤ وَالَّذِیْنَ

और वह लोग जो	4	और इज़्ज़त की रोज़ी	बख़्शिश	उन के लिए	यही लोग	नेक

سَعَوْ فِیْۤ اٰیٰتِنَا مُعٰجِزِیْنَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِیْمٌ ۝٥

5	सख़्त दर्दनाक	से	अ़ज़ाब	उन के लिए	यही लोग	हराने के लिए	हमारी आयतों में	उन्हों ने कोशिश की

وَیَرَی الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ

तुम्हारे रब की तरफ़ से	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	वह जो कि	इल्म	दिया गया	वह लोग जिन्हें	और वह देखते हैं

هُوَ الْحَقَّ ۙ وَیَهْدِیْۤ اِلٰی صِرَاطِ الْعَزِیْزِ الْحَمِیْدِ ۝٦

6	सज़ावार तारीफ़	ग़ालिब	रास्ता	तरफ़	और वह रहनुमाई करता है	वह हक़

وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰی رَجُلٍ یُّنَبِّئُكُمْ

वह ख़बर देता है तुम्हें	ऐसा आदमी	पर	हम बतलाएं तुम्हें	क्या	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा (कहते हैं)

اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِیْ خَلْقٍ جَدِیْدٍ ۝٧ ۚ

7	ज़िन्दगी नई	अलबत्ता में	बेशक तुम	पूरी तरह रेज़ा रेज़ा	तुम रेज़ा रेज़ा हो जाओगे	जब

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है, और उसी के लिए हर तारीफ़ है आख़िरत में, और वह हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (1)
वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है (मसलन पानी) और जो उस से निकलता है, और जो आस्मान से नाज़िल होता है, और जो उस में चढ़ता है, और वह मेहरबान है बख़्शने वाला। (2)
और कहते हैं काफ़िर कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी, आप (स) फ़रमा दें हाँ! मेरे रब की क़सम! अलबत्ता वह तुम पर ज़रूर आएगी, और वह ग़ैब का जानने वाला है। उस से एक ज़र्रे के बराबर भी पोशीदा नहीं आस्मानों में और न ज़मीन में, और न छोटा उस से और न बड़ा मगर (सब कुछ) रोशन किताब में है। (3)
ताकि वह उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (4)
और जिन लोगों ने हमारी आयतों में कोशिश की हराने के लिए, उन ही लोगों के लिए सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब है। (5)
और जिन्हें इल्म दिया गया वह देखते (जानते) हैं कि जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल किया गया है वह हक़ है, और (अल्लाह) ग़ालिब, सज़ावार तारीफ़ के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है। (6)
और काफ़िर कहते हैं क्या हम तुम्हें बताएं ऐसा आदमी जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम पूरी तरह रेज़ा रेज़ा हो जाओगे, तो बेशक तुम नई ज़िन्दगी में (आओगे)। (7)

اَفْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	बल्कि	जुनून	उसे	या	झूट	अल्लाह पर	उस ने बान्धा

بِالْاٰخِرَةِ فِی الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ﴿٨﴾ اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰی مَا

जो	तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा?	8	दूर	और गुमराही	अ़ज़ाब में	आख़िरत पर

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنْ نَّشَاْ

अगर हम चाहें	और ज़मीन	आस्मान से	उन के पीछे	और जो	उन के आगे

نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ

बेशक	आस्मान से	टुकड़ा	उन पर	या गिरा दें	ज़मीन	उन्हें धंसा दें हम

فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ ع

फ़ज़्ल	अपनी तरफ़ से	दाऊद (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दिया	9	रुजूअ़ करने वाला	बन्दा	लिए-हर	अलबत्ता निशानी	इस में

يٰجِبَالُ اَوِّبِیْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ﴿١٠﴾ اَنِ اعْمَلْ

बनाओ	कि	10	लोहा	उस के लिए	और हम ने नर्म कर दिया	और परिन्दो	उस के साथ	तस्बीह करो	ऐ पहाड़ो

سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِی السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

तुम जो कुछ करते हो उस को	बेशक	अच्छे	और अ़मल करो	(कड़ियों के) जोड़ने में	और अन्दाज़ा रखो	कुशादह ज़िरहें

بَصِيْرٌ ﴿١١﴾ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ

एक माह	और शाम की मन्ज़िल	एक माह	उस की सुबह की मन्ज़िल	हवा	और सुलेमान (अ) के लिए	11	देख रहा हूँ

وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِاِذْنِ

इज़्न (हुक्म) से	उस के सामने	वह काम करते	जिन्न	और से	तांबे का चश्मा	और हम ने बहाया उस के लिए

رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿١٢﴾

12	आग (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	से-का	हम उस को चखाएंगे	हमारे हुक्म से	उन में से	कजी करेगा	और जो	उस के रब के

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ

हौज़ जैसे	और लगन	और तस्वीरें	बड़ी इमारतें (क़िलए)	से	जो वह चाहते	उस के लिए	वह बनाते

وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِیَ

मेरे बन्दे	से	और थोड़े	शुक्र बजा ला कर	ऐ ख़ानदाने दाऊद	तुम अ़मल करो	एक जगह जमी हुई	और देगें

الشَّكُوْرُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰی مَوْتِهٖۤ

उस की मौत का	उन्हें पता न दिया	मौत	उस पर	हुक्म जारी किया	फिर जब हम ने	13	शुक्र गुज़ार

اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ

जिन्न	हक़ीक़त खुली	वह गिर पड़ा	फिर जब	उस का अ़सा	वह खाता था	घुन का कीड़ा	मगर

اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِی الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿١٤﴾

14	ज़िल्लत	अ़ज़ाब	में	वह न रहते	ग़ैब	वह जानते होते	अगर

उस ने अल्लाह पर झूट बान्धा है या उसे जुनून (है), (नहीं) बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह अ़ज़ाब और दूर की (शदीद) गुमराही में हैं। (8)
क्या उन्हों ने नहीं देखा? उस की तरफ़ जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, यानी आस्मान और ज़मीन, अगर हम चाहें तो हम उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान का टुकड़ा गिरा दें, बेशक उस में निशानी है हर रुजूअ़ करने वाले बन्दे के लिए। (9)
और तहक़ीक़ हम ने दाऊद (अ) को अपनी तरफ़ से फ़ज़्ल अ़ता किया। ऐ पहाड़ो! उस के साथ तस्बीह करो और परिन्दो (तुम भी)। और हम ने उस के लिए लोहे को नर्म कर दिया। (10)
कि चौड़े ज़िरहें बनाओ, और कड़ियों को जोड़ने में अन्दाज़ा रखो, और अच्छे अ़मल करो, तुम जो कुछ करते हो बेशक मैं उस को देख रहा हूँ। (11)
और सुलेमान (अ) के लिए हवा (को मुसख़्ख़र) किया और उस की सुबह की मन्ज़िल एक माह (की राह होती) और शाम की मन्ज़िल एक माह (की राह) और हम ने उस के लिए तांबे का चश्मा बहाया, और जिन्नात में से (बाज़) उसके सामने काम करते थे उस के रब के हुक्म से। और उन में से जो हमारे हुक्म से कजी करेगा हम उसे दोज़ख़ के अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (12)
वह (जिन्नात) बनाते उस के लिए जो वह (सुलेमान अ) चाहते, क़िलए, और तस्वीरें, और हौज़ जैसे लगन, एक जगह जमी हुई देगें, ऐ ख़ानदाने दाऊद (अ)! तुम शुक्र बजा ला कर अ़मल करो, और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार थोड़े हैं। (13)
फिर जब हम ने उस की मौत का हुक्म जारी किया, उन्हें (जिन्नों को) उस की मौत का पता न दिया मगर घुन की तरह कीड़े (दीमक) ने, वह उस का अ़सा खाता था, फिर जब वह गिर पड़ा तो जिन्नों पर हक़ीक़त खुली कि अगर वह ग़ैब जानते होते तो वह न रहते ज़िल्लत के अ़ज़ाब में। (14)

لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۬ۥ

और बाएं	दाएं से	दो बाग़	एक निशानी	उन की आबादी	में	(क़ौम) सबा के लिए	अलबत्ता थी

كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ

और रब	पाकीज़ा	शहर	उस का	और शुक्र अदा करो	अपने रब का रिज़्क़	से	तुम खाओ

غَفُوْرٌ ﴿١٥﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ

और हम ने उन्हें बदल दिए	सैलाब बन्द से (रुका हुआ)	उन पर	तो हम ने भेजा	फिर उन्हों ने मुँह मोड़ लिया	15	बख़्शने वाला

بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ

बेरियां	और कुछ	और झाड़	बदमज़ा	मेवा	वाले	दो बाग़	उन के दो बाग़ों के बदले

قَلِيْلٍ ﴿١٦﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿١٧﴾

17	नाशुक्रा	मगर-सिर्फ़	हम सज़ा देते	और नहीं	उन्हों ने नाशुक्री की	उस के सबब जो	हम ने उन को सज़ा दी	यह	16	थोड़ी

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً

एक दूसरे से मुत्तसिल	बस्तियां	उस में	हम ने बरकत दी	वह जिन्हें	बस्तियां	और दरमियान	उन के दरमियान	और हम ने (आबाद) कर दिए

وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ؕ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿١٨﴾

18	अम्न से (बेख़ौफ़ ओ ख़तर)	और दिन (जमा)	रातों	उन में	तुम चलो (फिरो)	उन में आमद ओ रफ़्त	और हम ने मुक़र्रर कर दिया

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ

तो हम ने बना दिया उन्हें	अपनी जानों पर	और उन्हों ने ज़ुल्म किया	हमारे सफ़रों के दरमियान	दूरी पैदा कर दे	ऐ हमारे रब	वह कहने लगे

اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

निशानियां	उस में	बेशक	पूरी तरह परागन्दा	और हम ने उन्हें परागन्दा कर दिया	अफ़्साने

لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿١٩﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ

पस उन्हों ने उस की पैरवी की	अपना गुमान	इब्लीस	उन पर	सच कर दिखाया	और अलबत्ता	19	शुक्र गुज़ार	हर सब्र करने वाले

اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ

कोई ग़ल्बा	उन पर	उसे (इब्लीस को)	और न था	20	मोमिनीन	से-का	एक गिरोह	सिवाए

اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ

शक में	उस से	वह	उस से जो	आख़िरत पर	जो ईमान रखता है	ताकि हम मालूम कर लें	मगर

ع ٢ ١٢ ٨ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿٢١﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ

गुमान करते हो	उन को जिन्हें	पुकारो	फ़रमा दें	21	निगहबान	हर शै	पर	और तेरा रब

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا

और न	आस्मानों में	एक ज़र्रे के बराबर	वह मालिक नहीं हैं	अल्लाह के सिवा

فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿٢٢﴾

22	कोई मददगार	उन में से	और नहीं उस (अल्लाह) का	उन (आस्मान और ज़मीन) में कोई साझा	उन का	और नहीं	ज़मीन में

अलबत्ता क़ौमे सबा के लिए उन की आबादी में निशानी थी, दो बाग़ दाएं और बाएं, (हम ने कह दिया कि) तुम अपने परवरदिगार के रिज़्क़ से खाओ और उस का शुक्र अदा करो, शहर है पाकीज़ा और परवरदिगार है बख़्शने वाला। (15)

फिर उन्हों ने मुँह मोड़ लिया तो हम ने उन पर (बन्द तोड़ कर) ज़ोर का सैलाब भेजा और उन दो बाग़ों के बदले (दूसरे) दो बाग़ दिए बदमज़ा मेवा वाले और कुछ झाड़, और थोड़ी सी बेरियाँ। (16)

यह हम ने उन्हें सज़ा दी इस लिए कि उन्हों ने नाशुक्री की और हम सिर्फ़ नाशुक्रे को सज़ा देते हैं। (17)

और हम ने आबाद कर दी उन के दरमियान और (शाम) की उन बस्तियों के दरमियान जिन्हें हम ने बरकत दी है, एक दूसरे से लगी बस्तियां, और हम ने उन में सफ़र के पड़ाव मुक़र्रर कर दीं, तुम उन में चलो फिरो, रात और दिन बेख़ौफ़ ओ ख़तर। (18)

वह कहने लगे ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे सफ़रों के दरमियान दूरी पैदा कर दे, और उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो हम ने उन्हें बना दिया अफ़्साने, और हम ने उन्हें पूरी पूरी तरह परागन्दा कर दिया, बेशक उस में हर बड़े सब्र करने वाले शुक्र गुज़ार के लिए नशिानियां हैं। (19)

और अलबत्ता इब्लीस ने उन पर अपना गुमान सच कर दिखाया, पस उन्हों ने उस की पैरवी की सिवाए एक गिरोह मोमिनों के। (20)

और इब्लीस को उन पर कोई ग़ल्बा न था मगर (हम चाहते थे कि) मालूम कर लें जो आख़िरत पर ईमान रखता है उस से (जुदा कर के) जो उस (के बारे में) शक में है, और तेरा रब हर शै पर निगहबान है। (21)

आप (स) फ़रमा दें, उन्हें पुकारो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, वह (तो) एक ज़र्रा बराबर चीज़ के भी मालिक नहीं (इख़्तियार नहीं रखते) आस्मानों में और न ज़मीन में और न उन (आस्मान और ज़मीन) में उन का कोई साझा है और न उन में से कोई (अल्लाह का) मददगार है। (22)

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ۭ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ

दूर कर दी जाती है	जब	यहां तक	उस को	जिसे वह इजाज़त दे	सिवाए	उस के पास	शफ़ाअ़त	और नफ़ा नहीं देती

عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ۭ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ

बुलन्द मरतबा	और वह	हक़	वह कहते हैं	तुम्हारे रब ने	फ़रमाया	क्या	कहते हैं	उन के दिलों से

الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۙ

फ़रमा दें अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों से	तुम को रिज़्क़ देता है	कौन	फ़रमा दें	23	बुज़ुर्ग क़द्र

وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ

तुम से न पूछा जाएगा	फ़रमादें	24	खुली	गुमराही में	या	अलबत्ता हिदायत पर	तुम ही	या	और बेशक हम

عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ

फिर	हमारा रब	हम सब को	वह जमा करेगा	फ़रमा दें आप (स)	25	जो तुम करते हो	उसकी बाबत	और न हम से पूछा जाएगा	जो हम ने गुनाह किया	उसकी बाबत

يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۭ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ

तुम ने साथ मिला दिया है	वह जिन्हें	मुझे दिखाओ	फ़रमा दें	26	जानने वाला	फ़ैसला करने वाला	और वह	ठीक ठीक	हमारे दरमियान	फ़ैसला करेगा

بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ۭ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ

आप (स) को हम ने भेजा	और नहीं	27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वह अल्लाह	बल्कि	हरगिज़ नहीं	शरीक	उस के साथ

اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	नहीं जानते	अक्सर लोग	और लेकिन	और डर सुनाने वाला	खुशख़बरी देने वाला	मगर तमाम लोगों (नुए-इन्सानी) के लिए

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ

एक दिन	वादा	तुम्हारे लिए	फ़रमा दें	29	सच्चे	तुम हो	अगर	यह वादा (क़ियामत)	कब	और वह कहते हैं

لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं	30	तुम आगे बढ़ सकते हो	और न	एक घड़ी	उस से	न तुम पीछे हट सकते हो

لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ وَلَوْ تَرٰٓى

और काश तुम देखो	इस से पहले	उस पर जो	और न	इस क़ुरआन पर	हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे

اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ښ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ

दूसरे	तरफ़	उन में से एक	लौटाएगा (रद करेगा)	अपने रब के सामने	खड़े किए जाएंगे	ज़ालिम (जमा)	जब

الْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ

अगर न तुम होते	तकब्बुर करते थे (बड़े लोग)	उन लोगों को जो	जो कमज़ोर किए गए	कहेंगे	बात

لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ

क्या हम	उन से जो कमज़ोर किए गए	जो लोग तकब्बुर करते थे (बड़े लोग)	कहेंगे	31	ईमान लाने वाले	ज़रूर हम होते

صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

32	मुज्रिम (जमा)	तुम थे	बल्कि	जब आ गई तुम्हारे पास	उस के बाद	हिदायत	से	हम ने रोका तुम्हें

ع ٣ / ٩ النصف

और शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) नफ़ा नहीं देती उस के पास सिवाए उस के जिसे वह इजाज़त देदे, यहां तक कि जब उन के दिलों से (घबराहट) दूर कर दी जाती है तो कहते हैं क्या कहा है तुम्हारे रब ने, वह (सिफ़ारिशी) कहते हैं कि हक़ (फ़रमाया है), और वह बुलन्द मरतबा बुज़ुर्ग क़द्र है। (23)

आप (स) फ़रमा दें कौन तुम्हें रोज़ी देता है आस्मानों से और ज़मीन से, फ़रमा दें "अल्लाह"। बेशक हम या तुम (दोनों में से एक) अलबत्ता हिदायत पर है या खुली गुमराही में है। (24)

आप (स) फ़रमा दें (अगर हम मुज्रिम हैं तो) तुम से उस गुनाह की बाबत न पूछा जाएगा जो हम ने किया और न हम से उस बाबत पूछा जाएगा जो तुम करते हो। (25)

फ़रमा दें हम सब को जमा करेगा हमारा रब, फिर हमारे दरमियान ठीक ठीक फ़ैसला करेगा, और वह फ़ैसला करने वाला, जानने वाला है। (26)

आप (स) फ़रमा दें मुझे दिखाओ जिन्हें तुम ने साथ मिलाया है उस के साथ शरीक (ठहरा कर), हरगिज़ नहीं बल्कि अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)

और हम ने आप (स) को भेजा है तमाम नुए-इन्सानी के लिए खुशख़बरी देने वाला, और डर सुनाने वाला, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (28)

और वह कहते हैं यह वादाए क़ियामत कब (आएगा) अगर तुम सच्चे हो। (29)

आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए वादे का एक दिन (तय) है, उस से न तुम एक घड़ी पीछे हट सकते हो, और न तुम आगे बढ़ सकते हो। (30)

और काफ़िर कहते हैं: हम हरगिज़ इस क़ुरआन पर ईमान न लाएंगे, और न उन (किताबों) पर जो इस से पहले थीं, और काश! तुम देखो, जब यह ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे, रद करेगा उन में से एक दूसरे की बात, कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान लाने वाले होते। (31)

और बड़े लोग कमज़ोर लोगों से कहेंगे, क्या हम ने तुम्हें हिदायत से रोका? जब कि वह तुम्हारे पास आई (नहीं), बल्कि तुम (खुद) मुज्रिम थे। (32)

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

रात और दिन	चाल	बल्कि	उन लोगों से जो तकब्बुर करते थे (बड़े)	कमज़ोर किए गए	वह लोग जो	और कहेंगे

اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ وَاَسَرُّوا

और वह छुपाएंगे	शरीक (जमा)	उस के लिए	और हम ठहराएं	अल्लाह का	कि हम इन्कार करें	जब तुम हुक्म देते थे हमें

النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ

गर्दनों में	तौक़	और हम डालेंगे	अ़ज़ाब	जब वह देखेंगे	शर्मिन्दगी

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ

किसी बस्ती में	और हम ने नहीं भेजा	33	वह करते थे	जो	मगर	वह सज़ा न दिए जाएंगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

34	मुन्किर हैं	उस के	तुम जो दे कर भेजे गए हो	बेशक हम	उस के ख़ुशहाल लोग	कहा	मगर	कोई डराने वाला

وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾

35	अ़ज़ाब दिए जाने वाले	हम	और नहीं	और औलाद में	माल में	ज़ियादा	हम	और उन्हों ने कहा

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

अक्सर लोग	और लेकिन	और तंग कर देता है	जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क़	वसीअ़ फ़रमाता है	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें

ع ١٠ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ

तुम्हें नज़्दीक करदे	वह जो कि	तुम्हारी औलाद	और न	तुम्हारे माल	और नहीं	36	नहीं जानते

عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۡ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	यही लोग	और उस ने अच्छे अ़मल किए	ईमान लाया	जो	मगर	दर्जा	हमारे नज़्दीक

جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	अम्न से होंगे	बालाख़ानों में	और वह	उस के बदले जो उन्हों ने किया	दुगनी	जज़ा

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ

अ़ज़ाब में	यही लोग	आजिज़ करने (हराने) वाले	हमारी आयतों में	कोशिश करते हैं	और जो लोग

مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क़	वसीअ़ फ़रमाता है	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें	38	हाज़िर किए जाएंगे

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ

तो वह	कोई शै	तुम ख़र्च करोगे	और जो	उस के लिए	और तंग कर देता है	अपने बन्दों में से

يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا

सब	वह जमा करेगा उन को	और जिस दिन	39	रिज़्क़ देने वाला	बेहतरीन	और वह	उस का इवज़ देगा

ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾

40	परस्तिश करते थे	तुम्हारी ही	क्या यह लोग	फ़रिश्तों को	फिर फ़रमाएगा

और कहेंगे कमज़ोर लोग बड़ों को: (नहीं) बल्कि (हमें रोक रखा था तुम्हारी) दिन रात की चालों ने, जब तुम हमें हुक्म देते थे कि हम अल्लाह का इन्कार करें और हम उस के लिए शरीक ठहराएं, और जब वह अ़ज़ाब देखेंगे तो शर्मिन्दगी छुपाएंगे, और हम तौक़ डालेंगे काफ़िरों की गर्दनों में, और वह (उसी की) सज़ा पाएंगे जो वह करते थे। (33)

और हम ने नहीं भेजा किसी बस्ती में कोई डराने वाला मगर उस के ख़ुशहाल लोगों ने कहा: जो (हिदायत) दे कर तुम भेजे गए हो, हम उस के मुन्किर हैं। (34)

और उन्हों ने कहा कि हम माल और औलाद में ज़ियादा (बढ़ कर) हैं, और हम अ़ज़ाब दिए जाने वाले नहीं (हमें अ़ज़ाब न होगा)। (35)

आप (स) फ़रमा दें बेशक मेरा रब जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) वह तंग कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (36)

और नहीं तुम्हारे माल और औलाद (ऐसे कि) जो तुम्हें दर्जा में हमारे नज़्दीक कर दें, मगर जो ईमान लाया और उस ने अच्छे अ़मल किए तो उन ही लोगों के लिए दुगनी जज़ा है उस के बदले जो उन्हों ने किया, और वह बालाख़ानों में अम्न से होंगे। (37)

और जो लोग हमारी आयतों को हराने की कोशिश करते हैं, यही लोग अ़ज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। (38)

आप (स) फ़रमा दें मेरा रब अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, और कोई शै तुम ख़र्च करोगे तो वह तुम को उस का इवज़ देगा, और वह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है। (39)

और जिस दिन वह जमा करेगा, उन सब को, फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा, क्या यह लोग तुम्हारी ही परस्तिश करते थे? (40)

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ

वह परस्तिश करते थे	बल्कि	उन के सिवाए (न कि वह)	हमारा कारसाज़	तू	तू पाक है	वह कहेंगे

الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ

तुम में से बाज़ (एक)	इख़्तियार नहीं रखता	सो आज	41	एतिक़ाद रखते थे	उन पर	इन में से अक्सर	जिन्न (जमा)

لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ

आग (जहन्नम) का अज़ाब	तुम चखो	जिन्हों ने ज़ुल्म किया	उन लोगों को	और हम कहेंगे	और न नुक़्सान का	नफ़ा का	बाज़ (दूसरे) के लिए

الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا

हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	42	तुम झुटलाते थे	उस को	तुम थे	वह जिस

بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا

उस से जिस	कि रोके तुम्हें	वह चाहता है	एक आदमी	मगर सिर्फ़	नहीं है यह	वह कहते हैं	वाज़ेह

كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ۭ وَقَالَ

और कहा	झूट घड़ा हुआ	मगर	नहीं यह	और वह कहते हैं	तुम्हारे बाप दादा	परस्तिश करते थे

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾

43	जादू खुला	मगर	यह नहीं	जब वह आया उन के पास	हक़ के बारे में	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ

आप (स) से पहले	उन की तरफ़	भेजा हम ने	और न	कि उन्हें पढ़ें	किताबें	दीं हम ने उन्हें	और न

مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ

दसवां हिस्सा	और यह न पहुँचे	इन से पहले	उन्हों ने जो	और झुटलाया	44	कोई डराने वाला

مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ قُلْ

फ़रमा दें	45	मेरा अज़ाब	हुआ	तो कैसा	मेरे रसूलों को	सो उन्हों ने झुटलाया	जो हम ने उन्हें दिया

ع ٥ ١١

اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى

और अकेले अकेले	दो, दो	तुम खड़े हो जाओ अल्लाह के वास्ते	कि	एक बात की	मैं सिर्फ़ नसीहत करता हूँ तुम्हें

ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۣ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ

तुम्हें	डराने वाले	मगर-सिर्फ़	वह	नहीं	कोई जुनून	क्या तुम्हारे साथी को	फिर तुम ग़ौर करो

بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ

कोई अजर	जो मैं ने मांगा हो तुम से	फ़रमा दें	46	सख़्त अज़ाब	आगे (आने से पहले)

فَهُوَ لَكُمْ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर-की	और वह	अल्लाह के ज़िम्मे	मगर-सिर्फ़	मेरा अजर	नहीं	तुम्हारा है	तो वह

شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾

48	सब ग़ैबों का जानने वाला	हक़ को	डालता (ऊपर से उतारता है)	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें	47	इत्तिलाअ़ रखने वाला

वह कहेंगे, तू पाक है, तू हमारा कारसाज़ है न कि वह, बल्कि वह जिन्नों की परस्तिश करते थे, उन में से अक्सर उन पर एतिक़ाद रखते थे। (41)

सो आज तुम में से कोई एक दूसरे के न नफ़ा का इख़्तियार रखता है और न नुक़्सान का, और हम उन लोगों को कहेंगे जिन्हों ने ज़ुल्म (शिर्क) किया: तुम जहन्नम के अ़ज़ाब (का मज़ा) चखो जिस को तुम झुटलाते थे। (42)

और जब उन पर पढ़ी जाती हैं हमारी वाज़ेह आयात तो वह कहते हैं: यह तो सिर्फ़ (तुम जैसा) आदमी है, चाहता है कि तुम्हें उन से रोके जिन की परस्तिश तुम्हारे बाप दादा करते थे, और वह कहते हैं यह (क़ुरआन) नहीं है मगर घड़ा हुआ झूट, और काफ़िरों ने हक़ के बारे में कहा जब वह उन के पास आया कि यह नहीं मगर खुला जादू। (43)

और हम ने उन्हें (मुश्रिकीने अरब को) किताबें नहीं दीं कि वह उन्हें पढ़ते हों और न आप (स) से पहले उन की तरफ़ कोई डराने वाला भेजा। (44)

और जो उन से पहले थे उन्हों ने झुटलाया, और यह (मुश्रिकीने अरब) उस के दसवें हिस्से को (भी) न पहुँचे जो हम ने उन्हें दिया था, सो उन्हों ने मेरे रसूलों को झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब। (45)

फ़रमा दें: मैं तुम्हें सिर्फ़ नसीहत करता हूँ एक बात की कि तुम अल्लाह के वास्ते खड़े हो जाओ दो, दो और अकेले अकेले, फिर तुम ग़ौर करो कि तुम्हारे साथी को क्या जुनून है, वह (स) तो सिर्फ़ सख़्त अ़ज़ाब आने से पहले तुम्हें डराने वाले हैं। (46)

आप (स) फ़रमा दें: मैं ने तुम से जो मांगा हो कोई अजर तो वह तुम्हारा है, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह के ज़िम्मे है, और वह हर शै की इत्तिलाअ़ रखने वाला (गवाह) है। (47)

आप (स) फ़रमा दें, बेशक मेरा रब ऊपर से हक़ उतारता है, और सब ग़ैब की बातों का जानने वाला है। (48)

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ اِنْ

अगर	फ़रमा दें	49	और न लौटाएगा	बातिल	और न पैदा करेगा	हक़ आ गया	फ़रमा दें

ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِىْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِىْٓ

वह वहि करता है	तो उस की बदौलत	मैं हिदायत पर हूँ	और अगर	अपनी जान पर (अपने नुक़्सान को)	मैं बहका हूँ	तो इस के सिवा नहीं	मैं बहका हूँ

اِلَىَّ رَبِّىْ ۭ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ

और न बच सकेंगे	वह घबराएंगे	जब	ऐ काश तुम देखो	50	क़रीब	सुनने वाला	बेशक वह	मेरा रब	मेरी तरफ़

وَاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾ وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ

पकड़ना (हाथ आना)	उन के लिए	और कहां	उस पर	हम ईमान लाए	और वह कहेंगे	51	क़रीब जगह (पास)	से	और पकड़ लिए जाएंगे

مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾ وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ

और वह फेंकते हैं	इस से क़ब्ल	उस से	और तहक़ीक़ उन्हों ने कुफ़्र किया	52	दूर (दारुलजज़ा)	जगह	से

بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ

जो वह चाहते थे	और दरमियान	उन के दरमियान	और आड़ कर दी गई	53	दूर जगह	से	बिन देखे

كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِىْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿٥٤﴾ ع ٦ ٩ ١٢

54	तरद्दुद में डालने वाले	शक	में	वह थे	बेशक वह	इस से क़ब्ल	उन के हम जिन्सों के साथ	किया गया	जैसे

آيَاتُهَا ٤٥ ❀ (٣٥) سُوْرَةُ فَاطِرٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकुआत 5 — (35) सूरह फ़ातिर — पैदा करने वाला — आयात 45

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا

पैग़म्बर	फ़रिश्ते	बनाने वाला	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

اُولِىْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِى الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	जो वह चाहे	पैदाइश में	ज़ियादा कर देता है	और चार चार	और तीन तीन	दो दो	परों वाले

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ

तो बन्द करने वाला नहीं	रहमत से	लोगों के लिए	खोल दे अल्लाह	जो	1	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर

لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾

2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	उस के बाद	उस का	तो कोई भेजने वाला नहीं	और जो वह बन्द कर दे	उस का

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	कोई पैदा करने वाला	क्या	अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	ऐ लोगो

يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۡ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣﴾

3	उलटे फिरे जाते हो तुम	तो कहां	उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	और ज़मीन	आस्मान से	वह तुम्हें रिज़्क़ देता है

आप (स) फ़रमा दें: हक़ आ गया और न (कोई नई चीज़) दिखाएगा बातिल और न लौटाएगा (कोई पुरानी चीज़)। (49)
आप (स) फ़रमा दें अगर मैं बहका हूँ तो इस के सिवा नहीं कि अपने नुक़्सान को बहका हूँ, और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो उस की बदौलत हूँ कि मेरा रब मेरी तरफ़ वहि करता है, बेशक वह सुनने वाला, क़रीब है। (50)
ऐ काश! तुम देखो, जब वह घबराएंगे तो (भाग कर) न बच सकेंगे, और पास ही से पकड़ लिए जाएंगे। (51)
और कहेंगे कि हम उस (नबी स) पर ईमान ले आए और कहां (मुमकिन) है उन के लिए दूर जगह (दारुलजज़ा) से (ईमान का) हाथ आना। (52)
और तहक़ीक़ उन्हों ने इस से क़ब्ल उस से कुफ़्र किया, और वह फेंकते हैं बिन देखे दूर जगह से (अटकल पच्चू बातें करते हैं)। (53)
जो वह चाहते थे, उस के और उन के दरमियान आड़ डाल दी गई, जैसे उन के हम जिन्सों के साथ इस से क़ब्ल किया गया, बेशक वह तरद्दुद में डालने वाले शक में थे। (54)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, फ़रिश्तों को पैग़ाम बर बनाने वाला, परों वाले दो दो, और तीन तीन, और चार चार, पैदाइश में जो चाहे वह ज़ियादा कर देता है, बेशक अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (1)
अल्लाह लोगों के लिए जो रहमत खोल दे तो (कोई) उस का बन्द करने वाला नहीं, और जो वह बन्द कर दे तो उस के बाद कोई उस का भेजने वाला नहीं, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (2)
ऐ लोगो! तुम याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत, क्या अल्लाह के सिवा कोई पैदा करने वाला है? वह तुम्हें आस्मान से रिज़्क़ देता है और ज़मीन से, उस के सिवा कोई माबूद नहीं तो कहां तुम उलटे फिरे जाते हो? (3)

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

लौटना	और अल्लाह की तरफ़	तुम से पहले	रसूल (जमा)	तो तहक़ीक़ झुटलाए गए	वह तुझे झुटलाएं	और अगर

الْاُمُوْرُ ﴿٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ

पस हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	ऐ लोगो	4	तमाम काम

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿٥﴾ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ

दुश्मन	तुम्हारे लिए	बेशक शैतान	5	धोके बाज़	अल्लाह से	और तुम्हें धोके में न डाल दे	दुनिया की ज़िन्दगी

فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿٦﴾

6	जहन्नम वाले	से	ताकि वह हों	अपने गिरोह को	वह तो बुलाता है	दुश्मन	पस उसे समझो

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	और जो लोग ईमान लाए	सख़्त अ़ज़ाब	उन के लिए	जिन लोगों ने कुफ़्र किया

ع ١ ١٣ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿٧﴾ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ

अच्छा	फिर उस ने देखा उसे	उस का बुरा अ़मल	उस के लिए	आरास्ता किया गया	सो क्या जिस	7	बड़ा	और अजर	बख़्शिश

فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۫ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ

तुम्हारी जान	पस न जाती रहे	जिस को वह चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है	गुमराह ठहराता है	पस बेशक अल्लाह

عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٨﴾ وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ

भेजा	वह जिस ने	और अल्लाह	8	वह करते हैं	उसे जो	जानने वाला	बेशक अल्लाह	हस्रत कर के	उन पर

الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ

ज़मीन	उस से	फिर हम ने ज़िन्दा किया	मुर्दा शहर	तरफ़	फिर हम उसे ले गए	बादल	फिर वह उठाती हैं	हवाएं

بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ

तो अल्लाह के लिए इज़्ज़त	इज़्ज़त	चाहता है	जो कोई	9	जी उठना	इसी तरह	उस के मरने के बाद

جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ

वह उस को बुलन्द करता है	अच्छा	और अ़मल	पाकीज़ा कलाम	चढ़ता है	उस की तरफ़	तमाम तर

وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ

उन लोगों	और तदबीर	अ़ज़ाब सख़्त	उन के लिए	बुरी	तदबीरें करते हैं	और जो लोग

هُوَ يَبُوْرُ ﴿١٠﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ

फिर उस ने तुम्हें बनाया	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	उस ने पैदा किया तुम्हें	और अल्लाह	10	वह अकारत जाएगी

اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ

उम्र पाता	और नहीं	उस के इल्म में है	मगर	और न वह जनती है	कोई औ़रत	हामिला होती है	और न	जोड़े जोड़े

مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١١﴾

11	आसान	अल्लाह पर	यह	बेशक	किताब में	मगर	उस की उम्र से	और न कमी की जाती है	कोई बड़ी उम्र वाला

और अगर वह तुझे झुटलाएं तो तहक़ीक़ झुटलाए गए हैं तुम से पहले भी रसूल, और तमाम कामों की बाज़गश्त (लौटना) अल्लाह की तरफ़ है। (4)

ऐ लोगो! बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे, और धोके बाज़ (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोके में न डाल दे। (5)

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है पस तुम उसे दुश्मन (ही) समझो, वह तो अपने गिरोह को बुलाता है ताकि वह जहन्नम वालों से हों। (6)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन लोगों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (7)

सो क्या जिस के लिए उस का बुरा अ़मल आरास्ता क्या गया, फिर उस ने उस को अच्छा देखा (समझा) (क्या वह नेकोकारों जैसा हो सकता है) पस बेशक जिस को अल्लाह चाहता है गुमराह ठहराता है और जिस को चाहता है हिदायत देता है, पस तुम्हारी जान न जाती रहे उन पर हस्रत कर के, बेशक जो वह करते हैं अल्लाह उसे जानता है। (8)

और अल्लाह (ही है) जिस ने भेजा हवाओं को, फिर वह बादलों को उठाती हैं, फिर हम उस (बादल) को मुर्दा शहर की तरफ़ ले गए, फिर हम ने उस से ज़मीन को उस के मरने (बंजर हो जाने) के बाद ज़िन्दा किया, इसी तरह (मुर्दों को रोज़े हश्र) जी उठना है। (9)

जो कोई इज़्ज़त चाहता है तो तमाम तर इज़्ज़त अल्लाह के लिए है। उस की तरफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम, और अच्छे अ़मल उस को बुलन्द करता है, और जो लोग बुरी तदबीरें करते हैं, उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और उन लोगों की तदबीर अकारत जाएगी। (10)

और अल्लाह (ही) ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया, और न कोई औ़रत हामिला होती है, और न वह जनती है, मगर उस के इल्म में है, और कोई बड़ी उम्र वाला उम्र नहीं पाता, और न किसी की उम्र से कमी की जाती है मगर (यह सब) किताब में लिखा हुआ है। यह बेशक अल्लाह पर आसान है। (11)

وَمَا يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ

आसान उस का पीना	शीरीं प्यास बुझाने वाला	यह	दोनों दर्या	और बराबर नहीं

وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ

और तुम निकालते हो	ताज़ा	गोश्त	तुम खाते हो	और हर एक से	शोर तल्ख़	और यह

حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا

ताकि तुम तलाश करो	चीरती हैं पानी को	उस में	कश्तियां	और तू देखता है	जिस को पहनते हो तुम	ज़ेवर

مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

और दाख़िल करता है दिन को	दिन में	वह दाख़िल करता है रात	12	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी)

فِى الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

मुक़र्ररा	एक वक़्त	हर एक चलता है	और चाँद	सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया	रात में

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

उस के सिवा	तुम पुकारते हो	और जिन को	उस के लिए बादशाहत	तुम्हारा परवरदिगार	यही है अल्लाह

مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿١٣﴾ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ

और अगर	तुम्हारी पुकार (दुआ)	वह नहीं सुनेंगे	तुम उन को पुकारो	अगर	13	खजूर की घुटली का छिलका	वह मालिक नहीं

سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ

तुम्हारे शिर्क करने का	वह इन्कार करेंगे	और रोज़े क़ियामत	तुम्हारी	वह हाजत पूरी न कर सकेंगे	वह सुन लें

ع ٢ ١٤ الثلثة

وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿١٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ

मोहताज	तुम	ऐ लोगो!	14	ख़बर देने वाला	मानिंद	और तुझ को ख़बर न देगा

اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿١٥﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

तुम्हें ले जाए	अगर वह चाहे	15	सज़ावारे हम्द	बेनियाज़	वह	और अल्लाह	अल्लाह के

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٦﴾ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿١٧﴾

17	दुशवार	अल्लाह पर	यह	और नहीं	16	नई ख़ल्क़त	और ले आए वह

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا

तरफ़ (लिए) अपना बोझ	कोई बोझ से लदा हुआ	बुलाए	और अगर	बोझ दूसरे का	कोई उठाने वाला	और नहीं उठाएगा

لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَىْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ

आप (स) डराते हैं	इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	क़राबतदार	अगरचे हों	कुछ	उस से	न उठाएगा वह

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ

नमाज़	और क़ाइम रखते हैं	बिन देखे	अपना रब	डरते हैं	वह लोग जो

وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾

18	लौट कर जाना	और अल्लाह की तरफ़	ख़ुद अपने लिए	वह पाक साफ़ होता है	तो सिर्फ़	पाक होता है	और जो

और दोनों दर्या बराबर नहीं, यह
(एक) शीरीं है प्यास बुझाने वाला,
उस का पीना भी आसान, और यह
(दूसरा) शोर तल्ख़ है, और हर
एक से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो,
और (उन में से) तुम ज़ेवर (मोती)
निकालते हो जिस को तुम पहनते
हो, और तू उस में कश्तियां देखता
है कि पानी को चीरती (हुई चलती
हैं) ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से
रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम
शुक्र करो। **(12)**
और रात को दिन में दाख़िल करता
है और दिन को रात में दाख़िल
करता है, और उस ने सूरज
चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक
मुक़र्ररा वक़्त तक चलता है, यही
तुम्हारा परवरदिगार है, उसी के
लिए बादशाहत, और जिन को
तुम उस के सिवा पुकारते हो, वह
खजूर की घुटली के छिलके (के भी)
मालिक नहीं। **(13)**
और तुम उनको पुकारो तो वह
नहीं सुनेंगे तुम्हारी पुकार, और
अगर वह सुन भी लें तो तुम्हारी
हाजत पूरी न कर सकेंगे, और वह
रोज़े क़ियामत तुम्हारे शिर्क करने
का इन्कार करेंगे, और तुझ को
ख़बर देने वाले (अल्लाह) की मानिंद
कोई ख़बर न देगा। **(14)**
ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मोहताज
हो, और अल्लाह ही बेनियाज़
सज़ावारे हम्द ओ सना है। **(15)**
अगर वह चाहे तो (सब को) ले
जाए (नाबूद कर दे) और नई
ख़ल्क़त ले आए। **(16)**
और यह नहीं है अल्लाह पर (कुछ)
दुशवार। **(17)**
और कोई उठाने वाला किसी दूसरे
का बोझ नहीं उठाएगा, और अगर
कोई बोझ से लदा हुआ (गुनाहगार
किसी को) अपना बोझ (उठाने) के
लिए बुलाए तो वह उस से कुछ
न उठाएगा, अगरचे उस का
क़राबतदार हो, आप (स) तो सिर्फ़
उनको डरा सकते हैं जो अपने रब
से डरते हैं बिन देखे, और नमाज़
क़ाइम रखते हैं, और जो पाक होता
है वह सिर्फ़ अपने लिए पाक साफ़
होता है, और अल्लाह की तरफ़ ही
लौट कर जाना है। **(18)**

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ﴿١٩﴾ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾

20	ओर न रोश्नी	और न अन्धेरे	19	और आँखों वाला	अन्धा	और बराबर नहीं

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ

मुर्दे	और न	ज़िन्दे	और नहीं बराबर	21	और न झुलसती हवा	और न साया

اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ

जो	सुनाने वाले	और तुम नहीं	जिस को वह चाहता है	सुना देता है	बेशक अल्लाह

فِى الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾ اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	हम ने आप (स) को भेजा	बेशक हम	23	डराने वाले	मगर-सिर्फ़	तुम नहीं	22	क़ब्रों में

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾

24	डराने वाला	उस में	मगर गुज़रा	कोई उम्मत	और नहीं	और डर सुनाने वाला	ख़ुशख़बरी देने वाला

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ جَآءَتْهُمْ

आए उन के पास	इन से अगले	वह लोग जो	तो तहक़ीक़ झुटलाया	वह तुम्हें झुटलाएं	और अगर

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ

फिर	25	रोशन	और किताबों के साथ	और सहीफ़ों के साथ	रोशन दलाइल के साथ	उन के रसूल

ع ٣ ١٢ ١٥ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٢٦﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	26	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	फिर कैसा	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया	मैं ने पकड़ा

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا

मुख़्तलिफ़	फल (जमा)	उस से	फिर हम ने निकाले	पानी	आस्मान से	उतारा

اَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ

मुख़्तलिफ़	और सुर्ख़	क़त्आत सफ़ेद	और पहाड़ों से-में	उन के रंग

اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ

और जानवर (जमा)	और लोगों से-में	27	सियाह	गहरे रंग	उन के रंग

وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ

अल्लाह	डरते हैं	इस के सिवा नहीं	उसी तरह	उन के रंग	मुख़्तलिफ़	और चौपाए

مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	बेशक	28	बख़्शने वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	इल्म वाले	उस के बन्दे	से

يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا

उस से जो	और वह ख़र्च करते हैं	नमाज़	और क़ाइम रखते हैं	अल्लाह की किताब	जो पढ़ते हैं

رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾

29	हरगिज़ घाटा नहीं	ऐसी तिजारत	वह उम्मीद रखते हैं	और खुले तौर पर	पोशीदा	हम ने उन्हें दिया

और बराबर नहीं अन्धा और आँखों वाला। (19)
और न अन्धेरे और न नूर (रोश्नी), (बराबर हैं)। (20)
और न साया और न झुलसती हवा। (21)
और बराबर नहीं ज़िन्दे (आ़लिम) और न मुर्दे (जाहिल), बेशक अल्लाह जिस को चाहता है सुना देता है, और तुम (उनको) सुनाने वाले नहीं जो क़बरों में हैं। (22)
बल्कि तुम सिर्फ़ डराने वाले हो। (23)
बेशक हम ने आप (स) को हक़ के साथ भेजा, ख़ुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला, और कोई उम्मत नहीं जिस में कोई डराने वाला न गुज़रा हो। (24)
और अगर वह तुम्हें झुटलाएं तो तहक़ीक़ उन के अगले लोगों ने भी झुटलाया, उन के पास उन के रसूल आए रोशन दलाइल (निशानात) और सहीफ़ों और रोशन किताबों के साथ। (25)
फिर जिन लोगों ने कुफ़्र किया मैं ने उन्हें पकड़ा, फिर कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब? (26)
क्या तू ने नहीं देखा? बेशक अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से फल निकाले, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, और पहाड़ों में क़त्आत (घाटियां) हैं सफ़ेद और सुर्ख़, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, और (कुछ) गहरे सियाह रंग के। (27)
और उसी तरह लोगों में, और जानवरों और चौपायों में, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, इस के सिवा नहीं कि अल्लाह से उस के इल्म वाले बन्दे (ही) डरते हैं, बेशक अल्लाह ग़ालिब, बख़्शने वाला है। (28)
बेशक जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो हम ने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर, वह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं (जिस में) हरगिज़ घाटा नहीं। (29)

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	बेशक वह	अपने फ़ज़्ल से	और वह उन्हें ज़ियादा दे	उन के अजर	ताकि वह पूरे पूरे दे दे

شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا

तस्दीक़ करने वाली	हक़	वह	किताब से	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि भेजी है	और वह जो	30	क़द्रदान

لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا

हम ने वारिस बनाया	फिर	31	देखने वाला	अलबत्ता बाख़बर	अपने बन्दों से	बेशक अल्लाह	उन के पास	उस की जो

الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ

अपनी जान पर	ज़ुल्म करने वाला	पस उन से (कोई)	अपने बन्दे	से-को	हम ने चुना	वह जिन्हें	किताब

وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

यह	हुक्म से अल्लाह के	नेकियों में	सबक़त ले जाने वाला	और उन से (कोई)	बीच का रास्ता चलने वाला	और उन से (कोई)

هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ

वह ज़ेवर पहनाए जाएंगे	वह उन में दाख़िल होंगे	बाग़ात हमेशगी के	32	फ़ज़्ल बड़ा	वह (यही)

فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾

33	रेशम	उस में	और उन का लिबास	और मोती	सोना	से	कंगन (जमा)	से-का	उन में

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا

हमारा रब	बेशक	ग़म	हम से	दूर कर दिया	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और वह कहेंगे

لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ

अपना फ़ज़्ल	से	हमेशा रहने का घर	हमें उतारा	वह जिस	34	क़द्र दान	अलबत्ता बख़्शने वाला

لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया	और वह जिन लोगों ने	35	थकावट	उस में	और न हमें छुएगी	कोई तक्लीफ़	उस में	न हमें छुएगी

لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ

और न हल्का किया जाएगा	कि वह मर जाएं	उन पर	न क़ज़ा आएगी	जहन्नम की आग	उन के लिए

عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾ ۚ وَهُمْ

और वह	36	हर नाशुक्रे	हम सज़ा देते हैं	इसी तरह	उस का अज़ाब	से-कुछ	उन से

يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ

बर अक्स	नेक	हम अमल करें	हमें निकाल ले	ऐ हमारे परवरदिगार	उस (दोज़ख़) में	चिल्लाएंगे

الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ

जो-जिस	उस में	कि नसीहत पकड़ लेता वह	क्या हम ने तुम्हें उम्र न दी थी	हम करते थे	उस के जो

ع ١١ ١٦ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾ ۚ

37	कोई मददगार	ज़ालिमों के लिए	पस नहीं	सो चखो तुम	डराने वाला	और आया तुम्हारे पास	नसीहत पकड़ता

ताकि अल्लाह उन्हें उन के अजर (ओ सवाब) पूरे पूरे दे, और उन्हें (और) ज़ियादा दे अपने फ़ज़्ल से, बेशक वह बख़्शने वाला, क़द्रदान है। (30)

और वह जो हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब भेजी है, वह हक़ है, उस की तस्दीक़ करने वाली जो उन के पास है, बेशक अल्लाह अपने बन्दों से बाख़बर है, देखने वाला। (31)

फिर हम ने अपने चुने हुए बन्दों को किताब का वारिस बनाया, पस उन में से कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला है, और उन में से कोई बीच की रास है, और उन में से कोई अल्लाह के हुक्म से नेकियों में सबक़त ले जाने वाला है, यही है बड़ा फ़ज़्ल। (32)

हमेशगी के बाग़ात हैं जिन में वह दाख़िल होंगे, वह उन में कंगनों के ज़ेवर पहनाए जाएंगे, सोने और मोती के, और उन में उन का लिबास रेशम का होगा। (33)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म दूर कर दिया, बेशक हमारा रब बख़्शने वाला, क़द्रदान है। (34)

वह जिस ने हमें हमेशा रहने के घर में उतारा अपने फ़ज़्ल से, न इस में हमें कोई तक्लीफ़ छुएगी, और न हमें इस में कोई थकावट छुएगी। (35)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए जहन्नम की आग है, न उन पर क़ज़ा आएगी कि वह मर जाएं, और न उन से हल्का किया जाएगा दोज़ख़ का कुछ अज़ाब, इसी तरह हर नाशुक्रे को अज़ाब देते हैं। (36)

और वह दोज़ख़ के अन्दर चिल्लाएंगे, ऐ हमारे परवरदिगार! हमें (यहां से) निकाल ले कि हम नेक अमल करें, उस के बरअक्स जो हम करते थे, क्या हम ने तुम्हें (इतनी) उम्र न दी थी कि नसीहत पकड़ लेता उस में जिसे नसीहत पकड़नी होती, और तुम्हारे पास डराने वाला (भी) आया, सो तुम (अब इन्कार का मज़ा) चखो, ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (37)

بेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानने वाला है, बेशक वह उन के सीनों के भेदों से बाख़बर है। (38)

वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में जांनशीन बनाया, सो जिस ने कुफ़्र किया तो उसी पर है उस के कुफ़्र (का वबाल) और काफ़िरों को उन के रब के नज़्दीक उन का कुफ़्र सिवाए ग़ज़ब के कुछ नहीं बढ़ाता, और काफ़िरों को नहीं बढ़ाता उन का कुफ़्र सिवाए ख़सारे के। (39)

आप (स) फ़रमा दें क्या तुम ने अपने शरीकों को देखा जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, तुम मुझे दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन से क्या पेदा किया है? या आस्मानों (के बनाने में) उन का क्या साझा है? या हम ने उन्हें कोई किताब दी है कि वह उस की सनद पर हों (सनद रखते हों), बल्कि ज़ालिम एक दूसरे से वादे नहीं करते सिवाए धोके के। (40)

बेशक अल्लाह ने थाम रखा है आस्मानों को और ज़मीन को कि वह टल (न) जाएं, और अगर वह टल जाएं तो उन्हें उस के बाद कोई भी नहीं थामेगा, बेशक वह (अल्लाह) हिल्म वाला, बख़्शने वाला है। (41)

और उन्हों (मुश्रिकीने मक्कह) ने अल्लाह की बड़ी सख़्त क़स्में खाईं कि अगर उन के पास कोई डराने वाला आए तो वह ज़रूर ज़ियादा हिदायत पाने वाले होंगे (दुनिया की) हर एक उम्मत से (बढ़ कर), फिर जब उन के पास एक नज़ीर आया तो उन में बिदकने के सिवा (और कुछ) ज़ियादा न हुआ। (42)

दुनिया में अपने आप को बड़ा समझने के सबब और बुरी चाल (के सबब), और बुरी चाल (का वबाल) सिर्फ़ उस के करने वाले पर पड़ता है, तो क्या वह सिर्फ़ पहलों के दस्तूर का इंतिज़ार कर रहे हैं! सो तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तग़य्युर न पाओगे। (43)

إِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ

बेशक अल्लाह	जानने वाला	आस्मानों की पोशीदा बातें	और ज़मीन	बेशक वह	बाख़बर

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ

सीनों (दिलों) के भेदों से	38	वही	जिस ने	तुम्हें बनाया	जांनशीन	ज़मीन में	सो जिस ने कुफ़्र किया

فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا

तो उसी पर	उस का कुफ़्र	और नहीं बढ़ाता	काफ़िर (जमा)	उन का कुफ़्र	नज़्दीक	उन का रब	सिवाए

مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

नाराज़ी (ग़ज़ब)	और नहीं बढ़ाता	काफ़िर (जमा)	उन का कुफ़्र	सिवाए	ख़सारा	39	फ़रमा दें	किया तुम ने देखा

شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِىْ مَاذَا خَلَقُوْا

अपने शरीक	वह जिन्हें	तुम पुकारते हो	अल्लाह के सिवा	तुम मुझे दिखाओ	क्या	उन्हों ने पैदा किया

مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا

से	ज़मीन	या	उन के लिए	साझा	आस्मानों में	या	हम ने दी उन्हें	कोई किताब

فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ

पस (कि) वह	दलील (सनद) पर	उस से-की	बल्कि	नहीं	वादे करते	ज़ालिम (जमा)	उन के बाज़ (एक)

بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

बाज़ (दूसरे) से	सिवाए	धोका	40	बेशक अल्लाह	थाम रखा है	आस्मान (जमा)	और ज़मीन

اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ

कि	टल जाएं वह	और अगर वह	टल जाएं	न	थामेगा उन्हें	कोई भी	उस के बाद

اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ

बेशक वह	है	हिल्म वाला	बख़्शने वाला	41	और उन्हों ने क़सम खाई	अल्लाह की	अपनी सख़्त क़स्में

لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ

अगर	उन के पास आए	कोई डराने वाला	अलबत्ता वह ज़रूर होंगे	ज़ियादा हिदायत पाने वाले	हर एक से	उम्मत (जमा)

فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤٢﴾ اِسْتِكْبَارًا

फिर जब	उन के पास आया	एक नज़ीर	न उन (में) ज़ियादा हुआ	मगर-सिवाए	बिदकना	42	अपने को बड़ा समझने के सबब

فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا

ज़मीन (दुनिया) में	और चाल	बुरी	और नहीं उठता (उलटा पड़ता)	चाल	बुरी	सिर्फ़

بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ

उस के करने वाले पर	तो क्या	वह इन्तिज़ार कर रहे हैं	मगर सिर्फ़	दस्तूर	पहले	सो तुम हरगिज़ न पाओगे

لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾

अल्लाह के दस्तूर में	कोई तबदीली	और तुम हरगिज़ न पाओगे	अल्लाह के दस्तूर में	कोई तग़य्युर	43

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

आक़िबत (अन्जाम)	हुआ	कैसा	सो वह देखते	ज़मीन (दुनिया) में	क्या वह चले फिरे नहीं

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَمَا

और नहीं	कुव्वत में	उन से	बहुत ज़ियादा	और वह थे	उन से पहले	उन लोगों का जो

كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ

ज़मीन में	और न	आस्मानों में	कोई शै	कि उसे आजिज़ कर दे	अल्लाह	है

اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ

लोग	अल्लाह पकड़ करे	और अगर	44	बड़ी कुदरत वाला	इल्म वाला	है	बेशक वह

بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ

और लेकिन	कोई चलने फिरने वाला	उस की पुश्त	पर	वह न छोड़े	उन के आमाल के सबब

يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ

उन की अजल	आ जाएगी	फिर जब	एक मुद्दते मुअय्यन	तक	वह उन्हें ढील देता है

٥ ع ٨ ١٧ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾

	45	देखने वाला	अपने बन्दों को	है	तो बेशक अल्लाह	

آيَاتُهَا ٨٣ ❀ سُوْرَةُ يٰسٓ (٣٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआत 5 — (36) सूरह या सीन — आयात 83

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

يٰسٓ ﴿١﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣﴾ عَلٰى صِرَاطٍ

रास्ता	पर	3	रसूलों में से	बेशक आप (स)	2	बाहिक्मत	क़सम है क़ुरआन	1	या सीन

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٥﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ

नहीं डराए गए	वह क़ौम	ताकि आप (स) डराएं	5	मेह्रबान	ग़ालिब	नाज़िल किया	4	सीधा

اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ

पस वह	उन में से अक्सर	पर	बात	तहक़ीक़ साबित हो गई	6	ग़ाफ़िल (जमा)	पस वह	उन के बाप (दादा)

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِىَ اِلَى

तक	फिर वह	तौक़	उन की गरदनें	में	बेशक हम ने किए (डाले)	7	ईमान न लाएंगे

الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ

उन के आगे	से	और हम ने कर दी	8	सर ऊँचा किए (सर उलल रहे हैं)	तो वह	ठोड़ियाँ

سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٩﴾

9	देखते नहीं	पस वह	फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया	एक दीवार	और उन के पीछे	एक दीवार

क्या वह दुनिया में चले फिरे नहीं कि वह देखते कि उन से पहले लोगों का अन्जाम कैसा हुआ! और वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि कोई शै आस्मानों में उस को आजिज़ कर दे और न ज़मीन में (कोई शै उसे हरा सकती है), बेशक वह इल्म वाला, कुदरत वाला है। (44)

और अगर अल्लाह लोगों को उन के आमाल के सबब पकड़े तो वह न छोड़े कोई चलने फिरने वाला उस की पुश्त (रुए ज़मीन) पर, लेकिन वह उन्हें एक मुद्दते मुअय्यन तक ढील देता है, फिर जब आ जाएगी उन की अजल तो बेशक अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है (उन के आमाल का बदला ज़रूर मिलेगा)। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

या सीन। (1)

क़सम है बाहिक्मत क़ुरआन की। (2)

बेशक आप (स) रसूलों में से हैं। (3)

सीधे रास्ते पर हैं। (4)

नाज़िल किया हुआ ग़ालिब, मेह्रबान का। (5)

ताकि आप (स) उस क़ौम को डराएं जिस के बाप दादा नहीं डराए गए, पस वह ग़ाफ़िल हैं। (6)

तहक़ीक़ उन में से अक्सर पर (अल्लाह की) बात साबित हो चुकी है, पस वह ईमान न लाएंगे। (7)

बेशक हम ने उन की गर्दनों में डाले हैं तौक़, फिर वह ठोड़ी तक (अड़ गए हैं) तो उन के सर उलल रहे हैं। (8)

और हम ने कर दी उन के आगे एक दीवार और उन के पीछे एक दीवार, फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया, पस वह देखते नहीं। (9)

وَسَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ءَاَنذَرۡتَهُمۡ اَمۡ لَمۡ تُنذِرۡهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿١٠﴾

10	वह ईमान न लाएंगे	तुम उन्हें न डराओ	या	ख़ाह तुम उन्हें डराओ	उन पर-उन के लिए	और बराबर

اِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكۡرَ وَخَشِىَ الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَيۡبِ ۚ

बिन देखे	रहमान (अल्लाह)	और डरे	किताबे नसीहत	पैरवी करे	जो	तुम डराते हो	इस के सिवा नहीं

فَبَشِّرۡهُ بِمَغۡفِرَةٍ وَّاَجۡرٍ كَرِيۡمٍ ﴿١١﴾ اِنَّا نَحۡنُ نُحۡىِ الۡمَوۡتٰى

मुर्दे	ज़िन्दा करते हैं	बेशक हम	11	अच्छा	और अजर	बख़्शिश की	पस उसे ख़ुशख़बरी दें

وَنَكۡتُبُ مَا قَدَّمُوۡا وَاٰثَارَهُمۡ ؕ وَكُلَّ شَىۡءٍ اَحۡصَيۡنٰهُ فِىۡۤ

में	हम ने उसे शुमार कर रखा है	और हर शै	और उन के असर (निशानात)	जो उन्हों ने आगे भेजा (अमल)	और हम लिखते हैं

وقف غفران

اِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ﴿١٢﴾ وَاضۡرِبۡ لَهُمۡ مَّثَلًا اَصۡحٰبَ الۡقَرۡيَةِ ۘ اِذۡ ع ١٢ ١٨

وقف لازم

जब	बस्ती वाले	मिसाल (क़िस्सा)	उन के लिए	और बयान करें आप (स)	12	किताबे रोशन

جَآءَهَا الۡمُرۡسَلُوۡنَ ﴿١٣﴾ اِذۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهِمُ اثۡنَيۡنِ فَكَذَّبُوۡهُمَا

तो उन्हों ने झुटलाया उन्हें	दो (2)	उन की तरफ़	हम ने भेजे	जब	13	रसूल (जमा)	उन के पास आए

فَعَزَّزۡنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوۡۤا اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ مُّرۡسَلُوۡنَ ﴿١٤﴾ قَالُوۡا

वह बोले	14	भेजे गए	तुम्हारी तरफ़	बेशक हम	पस उन्हों ने कहा	तीसरे से	फिर हम ने तक़वियत दी

مَاۤ اَنۡتُمۡ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا ۙ وَمَاۤ اَنۡزَلَ الرَّحۡمٰنُ مِنۡ شَىۡءٍ ۙ

कुछ	रहमान (अल्लाह)	उतारा	और नहीं	हम जैसे	आदमी	मगर-महज़	तुम नहीं हो

اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا تَكۡذِبُوۡنَ ﴿١٥﴾ قَالُوۡا رَبُّنَا يَعۡلَمُ اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ

तुम्हारी तरफ़	बेशक हम	जानता है	हमारा परवरदिगार	उन्हों ने कहा	15	झूट बोलते हो	मगर-महज़	तुम	नहीं

لَمُرۡسَلُوۡنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيۡنَاۤ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿١٧﴾ قَالُوۡا

वह कहने लगे	17	साफ़ साफ़	पहुँचा देना	मगर	हम पर	और नहीं	16	अलबत्ता भेजे गए

اِنَّا تَطَيَّرۡنَا بِكُمۡ ۚ لَئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهُوۡا لَنَرۡجُمَنَّكُمۡ وَلَيَمَسَّنَّكُمۡ

और ज़रूर पहुँचेगा तुम्हें	ज़रूर हम संगसार कर देंगे तुम्हें	तुम बाज़ न आए	अगर	तुम्हें	हम ने मनहूस पाया

مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوۡا طَآئِرُكُمۡ مَّعَكُمۡ ؕ اَئِنۡ

क्या	तुम्हारे साथ	तुम्हारी नहूसत	उन्हों ने कहा	18	दर्दनाक	अज़ाब	हम से

ذُكِّرۡتُمۡ ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ مُّسۡرِفُوۡنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنۡ اَقۡصَا

परला सिरा	से	और आया	19	हद से बढ़ने वाले	लोग	तुम	बल्कि	तुम समझाए गए

الۡمَدِيۡنَةِ رَجُلٌ يَّسۡعٰى قَالَ يٰقَوۡمِ اتَّبِعُوا الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۙ ﴿٢٠﴾

20	रसूलों की	तुम पैरवी करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	दौड़ता हुआ	एक आदमी	शहर

اتَّبِعُوۡا مَنۡ لَّا يَسۡـَٔـلُكُمۡ اَجۡرًا وَّهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿٢١﴾

21	हिदायत याफ़्ता	और वह	कोई अजर	तुम से नहीं मांगते	जो	तुम पैरवी करो

और बराबर है उन के लिए ख़ाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वह ईमान न लाएंगे। (10)
इस के सिवा नहीं कि तुम (उस को) डराते हो जो किताबे नसीहत की पैरवी करे। और बिन देखे अल्लाह से डरे, पस आप (स) उसे बख़्शिश और अच्छे अजर की ख़ुशख़बरी दें। (11)
बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं, और हम लिखते हैं उन के अमल जो उन्हों ने आगे भेजे और जो उन्हों ने पीछे (आसार) छोड़े। और हर शै को हम ने किताबे रोशन में शुमार कर रखा है। (12)
और आप (स) उन के लिए बस्ती वालों का क़िस्सा बयान करें, जब उन के पास रसूल आए। (13)
जब हम ने उन की तरफ़ दो (रसूल) भेजे तो उन्हों ने उन्हें झुटलाया, फिर हम ने तीसरे से तक़वियत दी, पस उन्हों ने कहाः बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (14)
वह बोलेः तुम महज़ हम जैसे आदमी हो, और नहीं उतारा रहमान (अल्लाह) ने कुछ भी, तुम महज़ झूट बोलते हो। (15)
उन्हों ने कहाः हमारा परवरदिगार जानता है, बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (16)
और हम पर (हमारे ज़िम्मे) नहीं मगर (सिर्फ़) साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (17)
वह कहने लगेः हम ने बेशक मनहूस पाया तुम्हें, अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें ज़रूर संगसार कर देंगे और तुम्हें हम से दर्दनाक अज़ाब ज़रूर पहुँचेगा। (18)
उन्हों ने कहाः तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है क्या तुम (इस को नहूसत समझते हो) कि तुम समझाए गए हो, बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो। (19)
और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उस ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम रसूलों की पैरवी करो। (20)
तुम उन की पैरवी करो जो तुम से कोई अजर नहीं मांगते और वह हिदायत याफ़्ता हैं। (21)